मद्हे हज़रत इमाम हसन असकरी[अ०]

बिन्ते ज़हरा नक़वी नदल हिन्दी साहिबा

रसाई दीदओ दिल की इमामे असकरी[अ०] तक है
हमारा राब्ता बस रौशनी से रौशनी तक है

विलाए असकरी[अ०] पर मरने वाले जी के रहते हैं
इसी मर जाने पर क़ुर्बान ख़ुद से ज़िन्दगी तक है

रहे नेमात ही मज़हब मेरा है सच मैं कहती हूँ
तगो दौ अपनी ऐ मौला! तुम्हारी ही गली तक है

तवातुर से वही हीरों की बोसागाह बनती है
रसाई जिस जबीं की उस गली की कंकरी तक है

वही अल्लाह वाला है वही अहमद को प्यारा है
कि जिसका सिलसिला यारो! दरे आले नबी[स०] तक है

वही अफ़राद मालूमात की दुनिया में जीते हैं
कि जिनकी आमदो शुद इल्म की बारादरी तक है

मुहिब्बे असकरी[अ०] दावे से कहती हूँ बहश्ती हैं
वही दावा जो पहले था वही दावा अभी तक है

अता ख़ालिक़ ने की है ताक़ते "कुन" मेरे मौला को
अदु की रफ़अते परवाज़ बस जादूगरी तक है

दुआ होते ही लो बग़दार जल थल होता जाता है
निज़ामे अबतरी सारे का सारा अब तरी तक है

जो कल बेकल थे अब शादाब हैं बाराने रहमत से
पहुँच अस्वाते ज़िन्दाबाद की दरिया दिली तक है

नदाए आले[अ०] अहमद[स०] को निदाए आसमानी है
असर मिदहत का तेरी सुन! दिले इब्ने अली[अ०] तक है

पैरवे असकरी[अ०] बनो! कैसे हो ज़िन्दगी अबस
उनकी विला अगर नहीं तब तो है वाक़ई अबस

मक्रो हसद शेआर हैं किब्रो रिया पसन्द हैं
इन सिफ़तों की वजह से आज हैं मोलवी अबस

उलफ़ते आले मुस्तफ़ा[स०] दौलते दीनो आख़िरत
इसके बग़ैर हो भी तो सारी तवंगरी अबस

नाम हसन[अ०] है आपका असकरी[अ०] आपका लक़ब
आप अमीरे काएनात, आपसे दुश्मनी अबस

क़हत की ज़द में लोग हैं क़हत की ज़द में दीन है
दोनों जहाँ में क्यों कहीं आज है खलबली अबस

दस्ते दुआए असकरी[अ०] बादे नमाज़ कह उठे
दीन को बेकली अबस ख़ुशकी में अबतरी अबस

बज गया डंका दहर में आले नबी[स०] के काम का
अपनों की भी निगाह में हो गया पादरी अबस

सबने ज़बाने हाल से इतनी तो बात सुन ही ली
ये हैं बराए रहबरी बाक़ी की रहबरी अबस

दर से हसन[अ०] के बटती हैं दोनों जहाँ की दौलतें
दर बदरी की ज़द में है हाए ये आदमी अबस

जिसमें नबीयो आल[अ०] की मदहो सना हो ऐ 'नदा'
है वही काम की फ़क़त बाक़ी तो शायरी अबस